परिवर्तन
PARIVARTAN

तक्ष शिला

हमार अंगना

अंक 1 अर्द्धवार्षिक | पूर्व-स्कूल एव अनौपचारिक शिक्षा पर परिवर्तन के प्रयासों का संकलन, आंगनबाड़ी केन्द्रों के लिए | दिसंबर 2014

बाल घर आँगन: संकल्पना और उद्देश्य

बच्चे बहुत सी बातें खुद करके सीखते हैं। बहुत छोटी–छोटी सी चीजें भी उनके लिए खुशी के यादगार पल लाते हैं। बच्चे अपनी आस पास को बारीकी से देखना और समझना चाहते हैं। इन बच्चों की अपनी ही दुनिया होती है जिसमें हम बड़े सरीक होते हैं ताकि हम उन्हें संवार सकें, उन्हें दिशा दे सकें न कि उन्हें नियंत्रितध्संयमित कर सकें। इन बच्चों की दुनिया के बारें में भिन्न–भिन्न शोध के माध्यम से काफी कुछ हमने जाना–समझा है लेकिन शायद ही हम इसे अपनी कार्यविधि में अपना पाए हैं। विगत वर्षों में पूर्व–स्कूल शिक्षा एक आवश्यक क्षेत्र के रूप में उभर कर सामने आई है और देश के 12.52 लाख आंगनबाड़ी केन्द्रों में समेकित बाल विकास सेवाओं के 6 बिंदु कार्यक्रम में इसकी उपस्थिति एक सराहनीय कदम कही जा सकती है। लेकिन इस हेतु जरुरी प्रशिक्षण और सामग्री का अभाव कहीं न कहीं इसे कमजोर भी बनाता रहा है।

परिवर्तन ग्रामीण छात्रों को एक सृजनात्मक और क्रियाशील वातावरण प्रदान करने के लिए प्रयासरत है। इसी संदर्भ में परिवर्तन आँगनबाड़ी जाने वाले बच्चों (3–6 वर्ष) के संज्ञानात्मक और रचनात्मक विकास के लिए बाल घर आँगन की शुरुआत की गयी है। बाल घर के माध्यम से हमारा प्रयास एक अपेक्षाकृत उपेक्षित मुद्दे पर काम के द्वारा अन्य आँगनवाड़ी केन्द्रों के लिए एक मॉडल को विकसित करने का है। पिछले करीब 10 माह से 4 आगनबाडी केन्द्रों (नरेन्द्रपुर, नारायणपुर, मिया के भटकन) के 20–25 बच्चों के साथ परिवर्तन परिसर में स्थित बाल घर के माध्यम से काम किया जा रहा है। इस हेतु नरेन्द्रपुर पंचायत के बड़हुलिआ गाँव की श्रीमती मधुबाला देवी बाल–फैसिलिटेटर के रूप में बाल विकास के कई मुद्दों और बाल घर आँगन की गतिविधियों पर आगनबाडी सेविका और सहायिका से बात करती रही हैं। इसके अतिरिक्त बाल घर आँगन में दो बार सेविकाओं के लिए कार्यशाला का भी आयोजन किया जा चूका है। बच्चों और उनके अभिभावकों के साथ भी एक गोष्ठी नुमा बाल संगम आयोजित किया जा चूका है जिसने इस तरह के प्रयासों की पूरी–पूरी वकालत भी की थी।

देखा जाए तो बाल घर आँगन एक प्रयास है इस दिशा में सबों को सोचने और कुछ कदम लेने का और इस कदम लेने हेतु जरुरी सहयोग दे पाने का। और यह प्रयास कभी भी एकाकी नहीं हो सकता, इसलिए बाल घर आँगन की समस्त बातें और सीखों को आपके सामने रख पाने का यह प्रयास है हमार अंगना।

परिवर्तन - एक परिचय

परिवर्तन समेकित ग्रामीण सामुदायिक विकास हेतु एक पहल है जिसके माध्यम से आस–पास के गाँवों के बच्चों, युवाओं, किशोरियों, महिलाओं, किसानों, कलाकारों को एक समुचित विकासोन्मुखी वातावरण देने की कोशिश की जा रही है। परिवर्तन नरेन्द्रपुर स्थित विस्तृत परिसर से कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों जैसे जीविका सम्बन्धी प्रशिक्षण, महिलाओं का आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण, पूर्व–स्कूल शिक्षा और बचपन विकास, शिक्षा, रंगमंच, सामुदायिक खेल और खेल के माध्यम से विकास और बुनाई पर काम कर रहा है। अक्टूबर 2011 में स्पिक मैके के प्रथम ग्रामीण विद्यालय कार्यशिविर (RSI) के साथ हुई विनम्र शुरुआत से अल्प अवधी में ही परिवर्तन ने अपने काम का तेजी से प्रसार किया है। इसमें कई प्रतिष्ठित सामाजिक संस्थाओं जैसे प्रथम–पेस, ज्योति महिला समाख्या, सृजनी, मैजिक बस इंडिया फाउंडेशन, CSISA के साथ साझेदारी शामिल रही है।

अगर सामाजिक संस्था के परिप्रेक्ष्य में देंखें तो परिवर्तन एक अनूठा प्रयास है क्यूंकि जहाँ एक ओर समेकित तरीके से कुछ क्षेत्रों पर ध्यान देकर बदलाव (आदर्श गाँव की तर्ज पर) लाने की पहल की जा रही है, वहीं दूसरी ओर इस क्षेत्र में अब तक इस दिशा में किये जा चुके सफल प्रयासों को यहाँ जगह देकर एक सुनियोजित कदम लिया जा रहा है। प्रोफेसर अमर्त्य सेन विकास को मानवीय स्वतंत्रता के प्रस्फुटन के रूप में देखते हैं जिसमें अलग अलग आयाम एक दुसरे को सशक्त बनाते हैं। और इस मायने में भी परिवर्तन विकास की बुनियादी बिन्दुओं की ठोस समझ बनाने के लिए एक सशक्त पहल है।

बाल घर आँगन: रुपरेखा और कार्यप्रणाली

बाल घर आँगन में मुख्य रूप से अलग-अलग गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को एक अच्छा माहौल देने की कोशिश की जा रही है। बाल घर आँगन को एक सुनिश्चित स्वरूप में व्यवस्थित किया गया है जिसमें निम्न भाग शामिल हैं-

- एक हिस्सा चीड़-फाड़ और कोलाज बनाने का है जिसमें बच्चे रंगीन कागज को अपने हाथों से अलग-अलग टुकड़ों में फाड़ कर व्यवस्थित रूप से चिपकाते हुए एक आकार देते हैं। बच्चों ने बादल, पेड़-पौधे, अलग-अलग फूल और जानवर को इस तरह से सजाया है। इसमें बच्चों का मोटर विकास होता है और साथ में आस-पास की समझ भी बढती है क्यूंकि यही गतिविधियां आगे की बात-चीत का आधार भी बनती हैं। इसके अतिरिक्त बच्चे कुछ दूसरी रचनात्मक गतिविधियों जैसे प्रिंट प्रयोग में भी शामिल होते है।
- एक हिस्सा लकड़ी ब्लॉक्स है जिसमें बच्चे अलग-अलग ब्लॉक्स को एक के ऊपर एक रख कर कुछ कुछ बनाने का प्रयास करते हैं। कई बार तो बच्चे एक दुसरे से ब्लॉक्स को लेकर छीना-झपटी भी करते हैं। लेकिन यह उन्हें पर्याप्त आजादी देता है कि वो कुछ मनचाहा सोच और बना पाएं।
- एक हिस्सा रंग-रंगीली का है जिसमें बच्चे अपने हिसाब से रंगों को चुनकर दी गयी

आकृति में रंगों को भरते हैं। इसमें बच्चों को पेंसिल पकड़ने से लेकर अपने तरीके से सीखने की आजादी दी गयी है। समूह में गतिविधि होने से एक दुसरे से सीखने की गुंजाईश भी बढ़ जाती है। इसके अलावा कुछ न्यू वेभ के टूल्स पर आधारित गतिविधियाँ दृ रंग पहचान भी शामिल होती है।

- एक हिस्सा अक्षर की पहचान और शब्द कोना है जिसमें बोले हुए अक्षर को बच्चे पहचानते हैं और अक्षर से नए–नए शब्द को जानते हैं। इसी को कविता, कहानी के साथ भी जोड़ा जाता है ताकि बच्चे शब्दों को पकड़ पायें और उनके प्रयोग को सुनते–सुनाते समझ जाए।
- एक हिस्सा संख्या कोना है जिसमें आकर्षक खेल और क्रियाकलाप जैसे पासा का खेल, मोती गिनो के माध्यम से संख्या की समझ बनायीं जाती है।
- एक हिस्सा बच्चों की किताबों का है जिसमें अच्छे चित्रांकन वाले चित्र भी हैं जिसे बच्चे खाली समय में खुद से निकलकर देखते हैं, पलटते हैं। कई कई बार तो बच्चे आपस में बैठकर खुद से बातों को रचते हैं।

इन गतिविधियों के माध्यम से बाल घर आँगन में खुला, सीखने–सिखाने का माहौल बनाने की कोशिश की जा रही है। समय–समय के साथ बाल घर आँगन की रुपरेखा में नए बिंदु भी जोड़े गए हैं, और हमारा यह प्रयास आगनबाडी केन्द्रों के लिए पूर्व–स्कूल शिक्षा पर एक मॉडल के रूप में उभर कर सामने आएगा।

बाल घर आँगन कुछ इस तरह से सजाया गया है ताकि बच्चों के काम उनके सामने रहे, जिन्हें वे देख सकें, जिन पर वह खुद कुछ बात–चीत कर सकें। बाल घर आँगन में जाने के पहले बच्चे टायर प्लेग्राउंड में कुछ समय बिताते है। इन प्रयासों को अलग अलग कार्यशाला के माध्यम से आंगनबाड़ी सेविकाओं से भी जोड़ने की कोशिश की जा रही है। और इनमें से कुछ केन्द्रों पर भी होते हुए दिखे हैं जो एक सकारात्मक पहल को इंकित करते हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से बाल घर आँगन में खुला, सीखने–सिखाने का माहौल बनाने की कोशिश की जा रही है। समय–समय के साथ बाल घर आँगन की रुपरेखा में नए बिंदु भी जोड़े गए हैं, और हमारा यह प्रयास आगनबाडी केन्द्रों के लिए पूर्व–स्कूल शिक्षा पर एक मॉडल के रूप में उभर कर सामने आएगा।

गतिविधियों का खाका

दिन की शुरूआत

बाल घर आँगन में बच्चे दोनों हाथों को जोड़े, आधी मुंदी हुई आँखों से प्रार्थना करते हुए दिन को शुरू करते हैं। येही वह समय होता है जब बच्चे सबसे ज्यादा अनुशाषित से मालूम पड़ते हैं। फिर उनका नाम बुलाकर उन्हें एक परिचय पत्र जैसा एक कार्ड दिया जाता है जिसपर उनका नाम लिखा रहता है। जल्द ही हमने ऐसा देखा कि इन बच्चों का इन कागज के टुकड़ो से बेहद लगाव हो गया था और तो और जब कभी लेट हो जाने के कारण उन्हें यह नहीं दिया जाता तो वह आकर मांगते भी। बाल घर आँगन की पहली गतिविधि एक्सरसाइज से शुरू होती है जिसमें दो बच्चे आगे आकर स्वर में 'एक पैर आगे, दूसरा पैर भी आगे' कहकर गाते हुए सारे बच्चों को करवाते हैं। फिर सारे बच्चे एक गोल में बैठ जाते हैं।

ब्लॉक्स/मिट्टी/पानी पर थिरकती नन्ही सोच–

बच्चों को जब लकड़ी के अलग अलग टुकड़ों के साथ जब छोड़ दिया जाता है तो कुछ अलग ही होता है। न जाने बच्चे कैसे एक के बाद एक ब्लॉक्स को इधर से उधर करते और ऊपर नीचे रखते कुछ अलग सा बना लेते हैं।साथ में समूह में बिठाने के बाद एक दुसरे के ब्लॉक्स को लेने की ज़िद भी शुरू होती है। और कुछ अलग सा बनाने के बाद भी ये नन्हे हाथ रुकते नहीं हैं बल्कि फिर से कुछ नया बनाने की शुरुआत में लग जाते हैं। इसी तरह मिट्टी भी उन्हें वह आधार देती है जिसके साथ वह खेल सकें, जिसके खुदरेपन को महसूस कर सकें और अपने आप को इसमें लिटा पाएं। पानी के साथ भी किये गए प्रयोग जैसे पानी में नाव, साबुन के बुलबुले भी कुछ ऐसी ही संभावना दे जाते हैं। बच्चों को यह एक खुला वातावरण देता है जिसमें वो अपने अपने तरीके से जुड़ते हैं।

अक्षर से शब्द तक

बच्चों के साथ अक्षर की पहचान के लिए अलग अलग अक्षर से शब्दों को लिखकर और चित्रांकन की मदद से सुन्दर तरीके से प्रस्तुत किया गया है। साथ में कविता 'अ से अनार, आ से आम पढना लिखना मेरा काम' के माध्यम से नए नए शब्द की जानकारी देने की कोशिश भी की गयी। इन शब्द पोस्टर का इस्तेमाल फिर बच्चों को अक्षर से शब्दों को बताने के लिए किया गया। शब्दों का चयन कुछ इस प्रकार से किया गया कि इन्हें पढने के क्रम में बच्चे अलग–अलग आवाज से परिचित हो पाएं। हालाँकि बच्चे शब्दों को नहीं पढ़ पाते थे, लेकिन चित्रों को देखकर अपने पहले की जानकारी के आधार पर बताते थे। इन शब्द पोस्टर को बाल घर आँगन में लगा दिया गया था। बाद में बच्चे खुद इनके पास जाकर एक दुसरे से नए शब्दों से अपनी जान–पहचान बना रहे थे।

कुछ बाहर की और कुछ अलग सी

बच्चे अपने हाथों से पांच पौधे भिन्डी और चने के बोये। एक दिन के बाद एक दिन सारे बच्चे पानी देने के लिए जाते थे। एक बार जब सारे बच्चे पानी देने गए तो भिन्डी के पौधे में आये फूल को देखकर जोर–जोर से ताली बजाने लगे। इसी तरह गर्मी के दिनों में बच्चे परिवर्तन में छाते के साथ सैर पर निकले। सब एक साथ धक्के–मुक्के के साथ अपने आप को छाते के नीचे रखे रहने का भरसक प्रयास कर रहे थे। एक दिन बच्चे

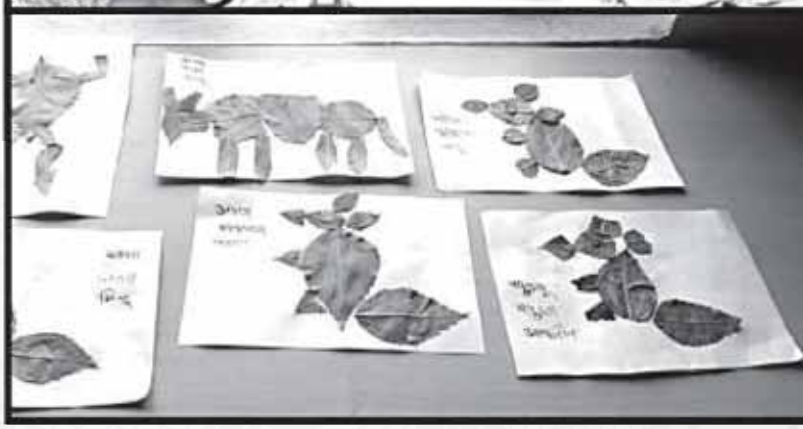

परिवर्तन में पेड़–पौधों को देखते हुए घूमने को निकले तो उन्होंने कई सारे पत्ते (अलग अलग आकार और रंग के) इकट्ठे कर लिए। फिर बाद में इनका इस्तेमाल करके कुछ जानवरों को बनाया गया और इसमें बच्चे काफी उत्साहित थे। इसी तरह एक दिन बारिश होने की गुंजाईश सी दिख रही थी, और उस समय बच्चों को बादल देखने के लिए जमीन पर लेट जाने के लिए कहा गया। बच्चे लेट कर आसमान को काफी देर तक निहारते रहे और फिर बाद में आकर उन्हें पेंसिल थमा कर जो आसमान में दिखा उसे बनाने के लिए कहा गया। और बच्चों ने मेरे सहयोग से आरी तिरछी रेखाएं खींचनी शुरू कर दी। कुछ देर बाद अलग अलग रूप में बादल सचमुच ही दिख रहे थे।

गुड़िया के संग बातें

इसमें गुड़िया के साथ बात–चीत करके बच्चे और भी खुलेपन के साथ बोलना सीखते हैं। जैसे एक बार गुड़िया बीमार हो गयी तो धनंजय ने कहा कि मेरे पापा गुड़िया को सुई लगा देंगे तो वह अच्छी हो जायेगी। एक दिन ऐसे ही बच्चे अपने घर से गुड़िया के लिए कुछ खाने का भी लेकर आये थे।

मिलजुल कर साथ में

सारे बच्चे एक साथ अच्छी– अच्छी कविता पढ़ते हैं। यह कवितायेँ और कहानियां एक थीम (जैसे– पेड़–पौधे, बारिश का मौसम) पर आधारित होती हैं। बच्चे जब इन कविताओं जैसे पेड़–पौधे हरे भरे, एक पेड़ पर बैठा बन्दर, ऊंट चला भाई, धम्मक धम्मक आता हाथी, को हाथों को हिलाते हुए जब अपनी तुतलाती आवाज में एक साथ पढ़कर सुनते हैं तो पूरा आँगन मानो चहकने लगता है। इनमें से कई कविता जैसे पेड़ों के कपडे हैं पत्ते के माध्यम से कुछ बातें भी की जाती हैं। इनके अलावा कुछेक छोटी छोटी गतिविधि के माध्यम से भी बच्चे खुद आकार, रंग, चित्र की समझ बनाते हैं।

ये सारी गतिविधियाँ काफी सरल मालूम पड़ती हैं और इन्हें काफी आसानी से केन्द्रों पर भी किया गया है और जा रहा है। लेकिन इन गतिविधियों के पीछे की सोच काफी बुनियादी और विकासवादी है क्यूंकि यह बच्चों को एक स्वतंत्र, क्रियाशील और रचनात्मक रूप से सक्रिय माहौल देने की बात करता है। और यह तब और भी महत्वपूर्ण बन जाता है तब जबकि इनकी शुरुआत होनी है।

बच्चों की बातें

बढ़ता लगाव

दीपक 3 साल का है। एक दिन जब दीपक को बाल घर आँगन लाने के लिए गए तो उस आगनबाडी की सेविका ने कहा, दीपक तुमको परिवर्तन नहीं जाना है, परिवर्तन दूर है, तुमको धूप लग जाएगा तो दीपक मेरे सामने रोने लगा और बोला, हमको धुप नहीं लगेगा, हम अपना झोला अपने सर पर रख लेंगे। ज्योति 6 साल की है जो नारायणपुर गाँव से आती है। ज्योति पहले आने से डरती थी और सारे बच्चों से बोल देती थी कि परिवर्तन में छुट्टी है, लेकिन कुछ दिनों बाद खुद ही सारे बच्चों को लेकर भी आ जाती थी। समी 4 साल का है। कभी शांति से तो बैठता ही नहीं है। खूब बोलता है। जिस किसी दिन भी हम बोल दिए कि आज हम सबको कहानी सुनायेंगे, सामी सब बच्चों से पहले दौड़ कर चटाई ले आता है और बिछाकर सब बच्चों को बैठाता है। और तो और बच्चों को बोलता है कि चुप–चाप सब कहानी सुनो।

साथ खेलते हुआ अपनापन

धनंजय 4 साल का है। वह खेलते समय झुला झूलता तो कविता भी सुनाता और अपने दोस्त अभय, जो भी करीब 4 साल का है और उसके बगल का है, को भी गिनती के साथ झुला झुलाता। अभय और धनंजय बहुत अच्छे दोस्त हैं। जब कभी अभय गुस्सा कर लेता है तो धनंजय हमको आकर बोलता है, मैडम जी, अभय हमरा से नइखे बोलत। सबसे पहले अंकुश (6 साल) और अलका (6 साल) ने खेलते हुए सिखाये हुए कविता (पेड़ पौधे हरे भरे, कागज की नाव चली) को जोर–जोर से बोलना शुरू किया था। उस टाइम पर तो मानो टायर ग्राउंड एक अच्छा–खासा मंच बन जाता। एक दिन अंशिका , जो 3 साल की है और नारायणपुर गाँव से आती है, बाल घर आँगन में खेल रही थी तभी धनंजय से उसका पैर कुचला गया। अब तो अंशिका जोर–जोर से रोने लगी। तब धनंजय घोड़ा बनकर अंशिका को पुरे बाल घर आँगन में घुमाने लगा। फिर धनंजय अपनी तुतलाती बोली में बोलता है, आज से हम तुम्हारा पैर कभी नहीं कुचलेंगे। अभय कभी चैन से नहीं बैठता। बच्चों को कभी मार भी देता, झूले से कई बार गिरा भी देता। कुछ दिन पहले दुर्गावती (4 साल, नरेन्द्रपुर) का घाव दुःख गया था और उसमे से खून निकलने लगा तब अभय उसके पास जाकर प्यार से कागज लेकर उसका खून साफ करने लगा।

दिखता असर

निकहर और नताशा, करीब 6 और 5 साल की है जो मिया के भटकन गाँव से आती है, यहाँ पर बताये जा रहे सारे कविताओं को याद करके अपनी आंगनबाड़ी के बच्चों को सुनाती थी। एक दिन जब निकहर जब बाल घर आँगन आई थी तो उसकी अम्मा उस दिन किन्ही कारणों से नाराज थी। तो जब वो उस दिन घर पहुंची तो अपनी अम्मा को मनाने के लिए एक गाना सुनाया दृ दादी अम्मा दादी अम्मा मान जाओ, छोड़ो भी ये गुस्सा अब हंस के दिखाओ। इस पर अम्मा मान गयी और यह बात दुसरे दिन निकहर खुशी खुशी मुझे बता रही थी कि हम ऐसे गाना गाए, तो मेरी अम्मा मान गयी। अमन और सिमी 4 और 5 साल के हैं जो नरेन्द्रपुर से आते हैं। इनकी माँ आंगनबाड़ी सेविका है। शुरुआत में काफी झिझक के बाद जब ये बच्चे आना शुरू किये तो जल्दी ही इन्होंने कविता जैसे एक पेड़ पर बैठा बन्दर याद कर ली और घर पर जाकर खूब अच्छे से हाथ हिलाते हुए सुनाते। सबों को इतनी खुशी मिलती कि सेविका (उसकी माँ) मुझे बताती नहीं थकती। खुशबु और कृष (3 साल, नारायणपुर) जब एक बार कविता सुनाने सबके

सामने खड़े हुए, तो इतना अच्छा कविता सुनाये कि सारे बच्चे हंसने लगे। कुछ अलग तरीके से ही हाथ को मोड़कर, फैला कर वो सुना रहे थे और सबको मजा भी आ रहा था।

आगे बढ़कर सबों को सिखला पाना और एक दुसरे से सीखना

धनु कुमार 6 साल का बच्चा है जो नरेन्द्रपुर गाँव से आता है। एक बार जब मिट्टी से कुछ बनाने को दिया गया था, और जब श्री देवी लाल पाटीदार, जो बच्चों से मिट्टी के माध्यम से कुछ बात–चीत कर रहे थे, थोड़ी देर के लिए कहीं गए तो धनु अच्छे से चिड़िया और उसका पंख बनाया। फिर सबको बताते हुए कुछ कुछ अच्छा बनवाया। धनु, अन्या, अंकुश, अलका और पूजा––इन सब बच्चों ने बाल घर आँगन में एक ऐसा माहौल बनाया है जहाँ सारे बच्चे एक दुसरे से ज्यादा सीख पाते हैं। अंकुश और अलका इतने अच्छे से बोलना सीख गए हैं कि किसी के भी सामने बोलने में सरमाते नहीं। दोनों बहुत ही प्यार से 'भालू ने खेली फुटबॉल' कहानी सुनाती हैं। एक बार इस कहानी को सुनाने के क्रम में उन्होंने खुशबु, करीब 3 साल की बच्ची जो नारायणपुर की है, को भी शामिल किया और उसे बाघ का बच्चा बना दिया। अभय और खुशी (6 और 5 साल) दोनों नारायणपुर से हैं और एक ही घर के हैं। खुशी जरा भी नहीं शर्माती थी और सब कुछ अच्छे से बोल लेती थी। लेकिन धीरे–धीरे अभय भी बोलने लगा और अब तो दोनों साथ–साथ एक्सरसाइज और प्रार्थना भी करवाते हैं।

मेरे बच्चे

मेरा इन बच्चों के साथ इतना अपनापन हो गया है कि जब कभी हम किसी कारणवश नहीं आ पाते हैं तो कुछ खाली खाली सा लगता है। अभय जब तुतलाते हुए बोलता है, मैडम जी आज हम खेल न पायनी तो हमको और भी अच्छा लगता है। एक बार बच्चे टायर

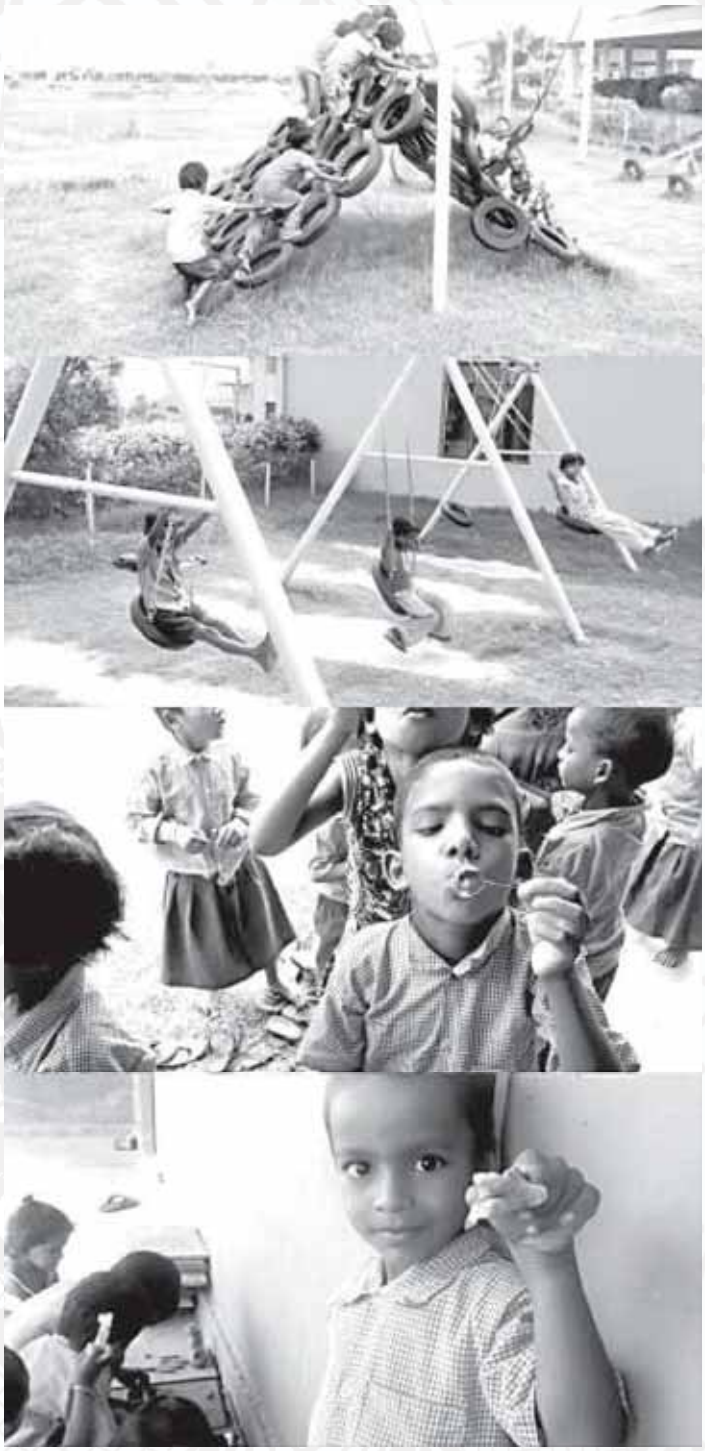

प्लेग्राउंड में खेल रहे थे तभी बगल से इक छोटा सा सांप झट से गया और धनंजय वही बगल में खेल रहा था। मेरा दिल तो जैसे भक से किया। हम बहुत सहम गए थे। इन बच्चों के साथ कहानी कहने, गीत–कविता सुनने में कितनी खुशी मिलती है, क्या बताएं हम। अब जाकर मुझे लगता है कि जितना ये बाल घर आँगन इन बच्चों का है उतना ही ये मेरा भी है।

बाल घर आंगन के बच्चे